देवनागरी उर्दू

इंजील शरीफ में कोई तब्दीली यानी बदलाव नहीं हुआ।

इंजील शरीफ में कोई तब्दीली यानी बदलाव नहीं हुआ।

आज कुछ लोग यह कहते हैं कि **इंजील-ए-शरीफ़** में तब्दीली कर दी गई है या वह मंसूख हो चुकी है। **अस्तग़फ़िरुल्लाह!** इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में ऐसा बयान देना बिल्कुल गैर-मुनासिब है।

इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली मुमकिन ही नहीं, क्योंकि **क़ादिर-ए-मुतलक़** अपनी किताबों की ख़ुद हिफ़ाज़त करता है। ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया। यक़ीनन, अगर वह यह कर सकता है, तो वह अपनी किताबों की हिफ़ाज़त भी कर सकता है। **हज़रत ईसा अल-मसीह** ने फ़रमाया था: "आसमान और ज़मीन टल जाएँगे, मगर मेरे कलाम कभी टलने वाले नहीं।"

कभी-कभी मैं लोगों से पूछता हूँ, "आख़िर इंजील-ए-शरीफ़ को किसने बदला?" आम तौर पर जवाब यह मिलता है कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** के पैरौकारों ने इसे बदल दिया। ऐसा कहना बे-बुनियाद और नादानी की बात है। अगर कोई यह कहे कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरौकारों ने ख़ुदा की किताब को बदल दिया, तो इसका मतलब यह होगा कि वे लोग **अल्लाह** से ज़्यादा ताक़तवर हैं। क्योंकि अल्लाह की किताब को उसके हाथों से छीनकर तब्दील करने के लिए अल्लाह से ज़्यादा ताक़त चाहिए।

कभी-कभी मैं यह भी पूछता हूँ, "आख़िर यह तब्दीली कब हुई?" इस सवाल का कोई तसल्ली-बख़्श यानी मुतमईन कर देने वाला जवाब मौजूद नहीं है। अगर कोई कहे कि यह किताबें क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले ही तब्दील हो चुकी थीं, तो फिर क़ुरआन ग़लत गवाही देता है, क्योंकि क़ुरआन ख़ुद गवाही देता है कि **इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह की किताब है**। क़ुरआन में सैकड़ों बार यह बयान मिलता है कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से नाज़िल की गई एक अच्छी किताब है।

लेकिन अगर कोई यह दावा करे कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ुरआन के नाज़िल होने के बाद बदली गई, तो तारीख़ इस दावे को रद्द कर देती है। इंजील-ए-शरीफ़ की हज़ारों क़दीम मख़्तूतात यानी **क़दीम नुस्ख़े** मौजूद हैं, जिनमें से कई क़ुरआन से भी पहले के हैं। जब इन क़दीम नुस्ख़ों का आपस में मुक़ाबला किया जाता है, तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि इंजील-ए-शरीफ़ में कोई तब्दीली नहीं हुई। आज हमारे पास जो इंजील-ए-शरीफ़ मौजूद है, वही उन क़दीम नुस्ख़ों के मुताबिक़ है।

लेकिन जो लोग क़ुरआन को मानते हैं, उनके लिए मैं क़ुरआन की दो तीन आयात पेश करना चाहता हूँ, जो साफ़ तौर पर इस बात की तस्दीक़ करती हैं कि इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह की तरफ़ से है।

सूरह यूनुस, जो दसवीं सूरह है, उसकी **आयत 94** क़ुरआन के लिए एक इम्तिहान पेश करती है। इसमें फ़रमाया गया है:

"अगर तुम उस चीज़ के बारे में शक में हो जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, तो उनसे पूछो जो तुमसे पहले किताब पढ़ते चले आ रहे हैं। बेशक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ तुम्हारे पास आ चुका है, पस शक करने वालों में से न बनो।"

इस आयत में क़ुरआन यह तस्लीम यानी क़बूल करता है कि अगर किसी को क़ुरआन या उसकी तालीम के बारे में शक हो, तो उसे पहले की किताबें पढ़ने वालों से पूछना चाहिए — यानी **तौरात**, **ज़बूर** और **इंजील-ए-शरीफ़** के मानने वालों से। इस तरह क़ुरआन ख़ुद अपने लिए यह क़ायदा मुक़र्रर करता है कि उसकी तालीम पहले की किताबों के मुताबिक़ होनी चाहिए। इस तरह क़ुरआन इस बात की तस्दीक़ करता है कि इंजील-ए-शरीफ़ **कलाम-ए-अल्लाह** है।

अब मैं क़ुरआन की एक और आयत पेश करता हूँ। **सूरह अल-माइदा**, जो पाँचवीं सूरह है, उसकी **आयत 46** में फ़रमाया गया है:

www.taleemulkalam.org

“और हमने उनके नक़्शे-क़दम पर ईसा इब्न-ए-मरयम को भेजा, जो तौरात की तस्दीक़ करने वाले थे जो उनसे पहले नाज़िल हुई थी। और हमने उन्हें इंजील अता की, जिसमें हिदायत और नूर है, और वह तौरात की तस्दीक़ करने वाली है जो उससे पहले नाज़िल हुई थी, और अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। और इंजील वालों को चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसमें नाज़िल किया है, उसके मुताबिक़ फ़ैसला करें।”

क़ुरआन गवाही देता है कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** को **हज़रत मूसा** (अलैहिस्सलाम) के बाद भेजा गया, यानी उनकी किताबें और तालीमात आपस में एक जैसी हैं। इसी वजह से हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरौकार सिर्फ़ एक किताब नहीं, बल्कि **तौरात, ज़बूर और इंजील-ए-शरीफ़** तीनों को पढ़ते हैं।

क़ुरआन की यह आयत यह भी बयान करती है कि इंजील-ए-शरीफ़ हमारी रूहानी ज़िंदगी के लिए **हिदायत और नूर** है। यक़ीनन, क़ुरआन इंजील-ए-शरीफ़ को बहुत बड़ा एहतिराम और अज़मत अता करता है।

क़ुरआन में सौ से ज़्यादा आयात मौजूद हैं जो इस हक़ीक़त की गवाही देती हैं कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से एक अच्छी किताब है। लेकिन क़ुरआन की कोई भी आयत यह नहीं कहती कि तौरात, ज़बूर या इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली हो चुकी है। फिर यह शरारत-आमेज़ ख़याल कहाँ से आया? अगर यह किताबों से नहीं आया, तो फिर यह इंसानों की सोच का नतीजा है।

अब सवाल यह है कि अगर मुक़द्दस किताबें एक बात कहें और इंसान दूसरी बात बताएँ, तो हमें किसकी बात माननी चाहिए? मेरे नज़दीक यह ख़याल, कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दी गई है, ख़ुदा की तरफ़ से नहीं बल्कि इंसानों की तरफ़ से है। इसलिए इस ख़याल को पूरी तरह रद्द कर देना चाहिए।

दरहक़ीक़त, यह **इब्लीस** की चाल है कि वह लोगों को यह यक़ीन दिलाए, कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दी गई है। **शैतान** चाहता है कि लोग इंजील-ए-शरीफ़ की क़ुदरत, ख़ूबसूरती और हक़ीक़त से महरूम रहें। इन झूटों को रद्द कीजिए और क़ादिर-ए-मुतलक़ की इस सच्ची वही की क़ुदरत और जमाल को ख़ुद आकर देखिए।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....